वाद्यों में वाद्य प्रचलित अवनध्द वाद्य 'तबला'

प्रो0 मीना सिंह

संगीत विभाग
पी0जी0 कॉलेज, गाजीपुर

शैल गुप्ता

शोध छात्रा
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,
जौनपुर

भारतीय संगीत जगत में हमेशा से ही गायन, वादन, नृत्य तीनों कलाओं का समावेश 'संगीत' कहलाता है।

"संगीत जगत में प्राचीनकाल से ही वाद्यों की चार श्रेणियाँ प्रचलित हैं– तत्, सुषिर, घन, अवनध्द।" तत् वाद्यों में सितार, वीणा, सरोद, तानपूरा; सुषिर वाद्यों में हारमोनियम, शहनाई, बासुरी; घनवाद्यों में जलतरंग, काष्ठतरंग और अवनद्ध वाद्यों में तबला, पखावज, ढोल, मृदंगम् इत्यादि वाद्य शामिल है।

भारतीय संगीत जगत में संगीत की तीनों विधाओं (गायन, वादन और नृत्य) को दो प्रमुख उप–विधाओं 'शास्त्रीय संगीत और उपशास्त्रीय संगीत' में बाँटा गया है। दोनों उप–विधाओं में आवश्यकतानुसार अलग–अलग सांगीतिक वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। उपर्युक्त लिखित वाद्यों में कुछ वाद्य स्वर और कुछ ताल–वाद्य है। प्रमुख स्वर वाद्यों में हारमोनियम और तानपूरा तथा प्रमुख ताल वाद्यों में तबला, पखावज, मृदंगम् इत्यादि प्रचलित है किन्तु उपर्युक्त वाद्यों में प्रयोग की दृष्टि से सर्वाधिक लोकप्रिय व प्रसिद्ध वाद्य यदि कोई है तो वह है वाद्यों में वाद्य प्रचलित अवनद्ध वाद्य 'तबला'।

किन्तु मुख्य विषय–वस्तु का विस्तृत वर्णन करने से पूर्व संगीत का संक्षिप्त ज्ञान होना भी आवश्यक है। जिससे मुख्य विषय–वस्तु को भली– भाति सरलता व सहजता से समझा जा सके।

प्राचीनकाल से ही संगीत की उत्पत्ति मानी जाती है। सामवेद युग से ही संगीत धीरे–धीरे जन–मानस पटल पर अपनी छाप छोड़ने लगा था। प्राचीनकाल से मध्यकाल तक संगीत उन्नति और विकास की सीढियाँ चढ़ने लगा था। उन्नति और विकास की यह क्रिया संगीत की गायन और नृत्य विधा के साथ–साथ वाद्य की समस्त श्रेणियों में भी क्रियान्वित होने लगी थी।

उत्तर– मध्यकाल का युग संगीत का सबसे अहम युग माना जाता है क्योंकि वर्तमान समय में जो भी 'सांगीतिक सैद्धान्तिक व क्रियात्मक' सामग्री उपलब्ध है वे अधिकांशतः

उत्तर–मध्यकाल की ही देन है। वर्तमान समय में जो भी रागें, तालें एवं संगीत पद्धतियाँ अध्ययन स्वरूप प्रचलन में है। वे सब उत्तर–मध्यकाल द्वारा ही, प्रदान की गयी 'अमूल्य सांगीतिक निधि है'। इसके अतिरिक्त मध्यकाल ने विभिन्न वाद्यों को भी जन्म दिया है जो आज भी भारतीय संगीत में प्रचलित है। चूँकि मध्यकाल ने संगीत की अपार सेवा की इसीलिए उत्तर–मध्यकाल को संगीत का युग कहा जाता है। मध्यकाल द्वारा प्रदान की गयी अमूल्य निधि सदा ही सांगीतिक प्रेमियों को लाभान्वित करती रहेंगी।

भारतीय संगीत जगत में संगीत की तीनों विधाओं (गायन, वादन और नृत्य) को दो प्रमुख उप–विधाओं 'शास्त्रीय संगीत और उपशास्त्रीय संगीत' में बाँटा गया है। दोनों उप–विधाओं में आवश्यकतानुसार अलग–अलग सांगीतिक वाद्यों का प्रयोग किया जाता है।

अवनद्ध श्रेणी के जितने भी वाद्य है यद्यपि वह पखावज, मृदंगम्, ढोलक या नाल हो, इन सभी अवनद्ध वाद्यों में तबला अपनी माधुर्य ध्वनि के कारण सभी अवनद्ध वाद्यों में सर्वोच्च स्थान को धारण किए हुए है।

प्राचीनकाल से ही संगीत की उत्पत्ति हो चुकी थी और प्राचीनकाल से वर्तमान काल तक संगीत का सफर प्रगतिशील रहा है न सिर्फ संगीत की मात्र एक विधा अपितु संगीत की सभी विधाएँ प्रगति पथ प्रदर्शक रही है और भविष्य में भी अर्थात् आगामी दिनों में भी संगीत की तीनों विधाएँ व उससे सम्बन्धित प्रत्येक क्षेत्र, प्रगति–पथ–प्रदर्शक व उन्नतिशील ही रहेंगी। संगीत की सभी विधाएँ लोकप्रिय है और अपनी–अपनी विशिष्टताओं के कारण जन–मानस पटल पर विराजमान भी है किन्तु यदि विधाओं को लोकप्रियता का श्रेणी–क्रम प्रदान किया जाए तो गायन विधा सर्वोच्च स्थान पर, वादन–विधा द्वितीय तथा नृत्य विधा तृतीय स्थान को धारण किए हुए है। इस प्रकार लोकप्रियता के आधार पर क्रमशः गायन, वादन तथा नृत्य को श्रेणी क्रम प्रदान है।

यद्यपि गायन–विधा सर्वोच्च लोकप्रियता को धारण किए हुए हैं किन्तु वादन विधा के अन्तर्गत वाद्यों में वाद्य प्रचलित अवनद्ध वाद्य 'तबला' भी अपनी लोकप्रियता का पंचम वर्तमान समय में लहरा रहा है। यद्यपि वादन विधा में तत्, सुषिर, घन, अवनद्ध वाद्य शामिल है किन्तु सभी श्रेणी के वाद्यों में अवनद्ध श्रेणी का वाद्य 'तबला' सर्वोपरि है।

"तबले की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने अपने अलग–अलग मत प्रस्तुत किए हैं। भारतीय संगीत जगत में खुसरो खा, अमीर खुसरो और उस्ताद सिद्धार खाँ नाम के उच्चकोटि के संगीतज्ञ थे। कुछ संगीतज्ञों अर्थात् सांगीतिक विद्वानों के अनुसार खुसरो खाँ तबले के जन्मदाता माने गए है तो कुछ विद्वानों ने उस्ताद सिद्धार खाँ को तबले का जन्मदाता बताया है किन्तु

अधिकांश विद्वानों के अनुसार सर्वसम्मति से 'अमीर खुसरो' को तबले का जन्मदाता माना जाता है। इस प्रकार तबले के जन्मदाता अमीर खुसरो है।"

आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में विभिन्न वाद्यों में तबला नामक अवनद्ध वाद्य अपना एक अलग स्थान बनाए हुए है। अवनद्ध श्रेणी के जितने भी वाद्य है यद्यपि वह पखावज, मृदंगम्, ढोलक या नाल हो, इन सभी अवनद्ध वाद्यों में तबला अपनी माधुर्य ध्वनि के कारण सभी अवनद्ध वाद्यों में सर्वोच्च स्थान को धारण किए हुए है। अपनी ध्वनि विशिष्टता के कारण ही तबला न सिर्फ सभी अवनद्ध वाद्यों में अपितु सभी श्रेणी के वाद्यों में सर्वोपरि है। इसका कारण यह है कि तबला एक ऐसा वाद्य है जो संगत की दृष्टि से सर्वाधिक प्रयोग किया जाता है अर्थात् गायन के क्षेत्र में संगत की दृष्टि से तबला सर्वाधिक प्रयोग किया जाने वाला वाद्य है। जो स्थान संगत के क्षेत्र में तबले को प्राप्त है वहीं स्थान प्राचीन काल से मध्य काल तक मृदंग (पखावज) को प्राप्त था। इसका मुख्य कारण ध्रुपद, धमार गायकी का प्रचार–प्रसार था।

प्राचीन काल (आदिकाल–800 ई. तक) से मध्यकाल (800 ई. से 1800 ई. तक) तक ध्रुपद और धमार गायकी के साथ संगत के दृष्टिकोण से मृदंग (पखावज) वादन को सर्वोत्तम माना जाता था किन्तु जब भारत पर मुस्लिम संस्कृति का प्रचार–प्रसार हुआ, फलस्वरूप ख्याल गायकी की परम्परा शुरू हुई। जिसके परिणामस्वरूप संगत के दृष्टिकोण से 'तबला अवनद्ध वाद्य' प्रचार में आया। जैसे–जैसे समय परिवर्तित होता गया, समय परिवर्तन के साथ–साथ ख्याल, टप्पा, ठुमरी, गज़ल, भजन आदि श्रृंगारिक गायन शैलियों का प्रचार–प्रसार बढ़ा और इस प्रकार की श्रृंगारिक गायन शैलियों के साथ गंभीर नाद युक्त मृदंग का संगत अनुपयुक्त था जिसके परिणामस्वरूप तबला वाद्य अपनी मधुर ध्वनि विशिष्टता के कारण उभर कर आया और तबले का संगत के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। तबले पर मृदंग के खुले तथा जोरदार बोलों के साथ–साथ, ढोलक के समान मींडयुक्त व बन्द बोलों का निकास सरलता व सहजता से सम्भव हो पाया। इस प्रकार एक साथ कई अवनद्ध वाद्यों (मृदंग, नाल, ढोलक) के बोलों का निकास एक मात्र तबला पर सम्भव हो पाया। इसीलिए 'तबला' संगत के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध माना जाने लगा।

इस प्रकार बोलों के सरल निकास, मिठास तथा विभिन्न लयकारियों के सुन्दर वादन के कारण तबले ने विभिन्न वाद्यों में 'शीर्षस्थ (शीर्ष–स्थान)' प्राप्त कर लिया।

न सिर्फ गायन के शास्त्रीय पक्ष में अपितु उपशास्त्रीय पक्ष– लोक संगीत, फिल्मी–संगीत में भी तबला प्रयोग किया जाने लगा।

लोक–संगीत और फिल्मी संगीत में ढोलक, नाल, आर्गन, हारमोनियम, पैड, तबला, गिटार आदि वाद्यों का प्रयोग किया जाता है किन्तु उपर्युक्त सभी वाद्यों में तबले को छोड़कर शेष सभी

वाद्य लोक संगीत के ही वाद्य है जबकि तबला लोक–संगीत और शास्त्रीय दोनों ही श्रेणी का वाद्य है। इसका प्रमुख कारण तबले पर निकलने वाली उसकी मधुर ध्वनि ही है। जबकि तबले को छोड़कर अन्य किसी भी वाद्य को शास्त्रीय संगीत में स्थान प्राप्त नहीं है। सिर्फ लोक–संगीत में ही उनका उपयोग किया जाता है।

गायन अथवा गीत के साथ अन्य वाद्य भी संगत के रूप में प्रयोग किए जाते है किन्तु तबला वाद्य के अतिरिक्त अन्य कोई भी वाद्य यदि संगत के रूप में उपलब्ध ना हो तो एकमात्र तबला ही अपनी माधुर्य ध्वनि से संगत के रूप में प्रयुक्त होकर, उस गीत की रसानुभूति को द्विगुणित कर, उसे माधुर्य बनाता है। यही कारण है कि तबला समस्त वाद्यों में सर्वोपरि वाद्य है। तबला न सिर्फ गायन के साथ अपितु नृत्य व अन्य वाद्यों के साथ भी संगत व जुगलबन्दी के माध्यम से अधिक उपयोगी हैं। गायन की भाति नृत्य व वाद्यों में भी अपनी माधुर्य ध्वनि से उनके रसास्वादन को द्विगुणित करता है।

तबला गायन विधा में अपनी अहम भूमिका अदा करने के साथ–साथ नृत्य विधा में भी अपनी अहम भूमिका निभाता है। विशेषकर कथक नृत्य, तबले के अभाव में अपूर्ण है। तबला संगत के अभाव में कथक नृत्य प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो सकती है। तबला संगत के अभाव में कथक नृत्य शत–प्रतिशत अधूरा है अर्थात् तबले का संगत कथक के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

इस प्रकार तबले का संगत न सिर्फ विभिन्न प्रकार की गायन–शैलियों के साथ अपितु गायन, वादन तथा नृत्य तीनों विधाओं के साथ किया जाता है। एक तबला संगतकार अपने संगत से तीनों विधाओं में स्थायित्व प्रदान करता है। भाव–निष्पत्ति में अपना योगदान प्रदान करता है और साथ ही साथ श्रोताओं को आनन्द की अनुभूति भी प्रदान करता है।

आज के वर्तमान युग में तबले का उपयोग गायन, वादन, नृत्य, लोक–संगीत, फिल्मी–संगीत, सोलो वादन आदि में खूब किया जा रहा है। प्रयोग दृष्टि के आधार पर ही इसकी लोकप्रियता बढ़ी है। जिसके परिणामस्वरूप यह सभी वाद्यों में अत्यधिक प्रचलित हो गया है। अतः तबले के सम्बन्ध में यह कहना अनुचित नहीं होगा कि 'तबला' वाद्यों में वाद्य प्रचलित अवनद्ध वाद्य है।

तबले का प्रचलन इतना अधिक है कि न सिर्फ भारत में अपितु पाश्चात्य देशों में भी तबले का अधिक प्रचार–प्रसार है। जाकिर हुसैन, स्वप्न चौधरी, नयन घोष आदि उच्च कोटि के तबला वादकों ने अपने उत्कृष्ठ व माधुर्य वादन से कई विदेशी दिलों को आकर्षित किया और तबले की माधुर्य ध्वनि ने उन्हें तबला सीखने के लिए मजबूर कर दिया। विदेशों में भी जेम्स किप्पन और जैराल्ड खुर्जियान आदि उत्कृष्ट तबला वादक मौजूद है। इस प्रकार तबला न सिर्फ भारत में अपितु पाश्चात्य देशों में भी लोकप्रिय है।

"आधुनिक काल में गायन–वादन तथा नृत्य की संगति में तबले का प्रयोग होता है। किन्तु कुछ समय पूर्व से तबले का स्वतन्त्र वादन भी अधिक लोकप्रिय होता जा रहा है।"

(राग परिचय –भाग–1, पृष्ठ –147)

जिसके परिणामस्वरूप लोगों ने तबले की शिक्षा ग्रहण करने हेतु 'भातखण्डे संगीत संस्थान', 'खैरागढ़ संगीत विश्वविद्यालय' जैसी शिक्षण–संस्थाओं में प्रवेश लेना प्रारम्भ कर दिया। फलस्वरूप संगीत के क्षेत्र में कई सोलो तबला वादकों की भी उत्पत्ति हुई। इस प्रकार न सिर्फ संगत के क्षेत्र में अपितु सोलो वादन के क्षेत्र में भी तबले का अधिक महत्व है। आज के वर्तमान युग में हजारों स्त्री–पुरुष विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में स्वतन्त्र तबला–वादन सीख रहे हैं। संगीत की विभिन्न विधाओं के साथ–साथ तबले के क्षेत्र में भी शोध कार्य किए जा रहे हैं। तबलें पर कई पुस्तकें जैसे अरविन्द मुलगावकर कृत 'तबला'; डॉ जमुना प्रसाद पटेल कृत 'तबलें की बंदिशें और विस्तार विधि' आदि कई पुस्तकें लिखी जा रही है। इतना ही नहीं तबला वादन कला रोजगार अवसर का माध्यम भी बना हुआ हैं।"

"तबले की महत्ता और लोकप्रियता के परिणामस्वरूप ही तबले के कुल छः घराने दिल्ली, अजराड़ा, लखनऊ, फर्रुखाबाद, बनारस, पंजाब और तबले के वर्णों व विभिन्न बंदिशों–पेशकार, कायदा, रेला, टुकड़ा, परन आदि का प्रादुर्भाव हुआ।"

वर्तमान समय में तबले का प्रचलन इतना अधिक बढ़ चुका है कि तबले का न सिर्फ पारम्परिक रूप अपितु तबले का इलेक्ट्रॉनिक स्वरूप भी लोगों द्वारा प्रयोग किया जा रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में नई दिशा व नवीन उपलब्धियों के लिए निरन्तर खोज जारी रहती है जिसके परिणामस्वरूप हमें नवीन तथ्यों की प्राप्ति होती है उसी खोज और अनुसंधान के परिणामस्वरूप वाद्यों के क्षेत्र में भी कुछ नवीन परिवर्तन हो रहे है जिसके फलस्वरूप वाद्यों का इलेक्ट्रॉनिक स्वरूप समक्ष प्रस्तुत हुआ। जिस प्रकार 'मूल–वाद्य–यंत्र' जन–मानस पटल पर विराजमान है अर्थात् लोकप्रिय है। उसी प्रकार वर्तमान समय में इलेक्ट्रॉनिक तबला भी **'जिसे हैन्ड सोनिक के नाम से जाना जाता है'** लोगों द्वारा खूब प्रयोग किया जा रहा है। इस प्रकार तबले का न सिर्फ पारम्परिक रूप अपितु इलेक्ट्रॉनिक रूप भी जन–मानस द्वारा खूब प्रयोग किया जा रहा है।

अन्ततः उपर्युक्त वर्णन के आधार पर तबले की लोक –प्रियता वास्तविक रूप में सिद्ध होती है कि वास्तव में 'तबला' वाद्यों में वाद्य प्रचलित अवनद्ध वाद्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची :–

पुस्तक का नाम	लेखक	संस्करण	पृष्ठसंख्या
(1) राग परिचय (भाग–1)	हरिशचन्द्र श्री0	संस्करण–2018	पृष्ठ–147
(2) ताल परिचय (भाग–2)	गिरीशचन्द्र श्री0	संस्करण–2010	पृष्ठ–18–19
(3) ताल परिचय (भाग–4)	गिरीशचन्द्र श्री0	पंचम संस्करण, 2013	पृष्ठ–152
(4) भारतीय कंठ संगीत और वाद्य संगीत(गायन–वादन सुमेल)	डॉ0 अरूण मिश्रा	.....	पृष्ठ 48, 67–70
(5) संगीत विशारद	वसंत तैतीसवा	संस्करण, अक्टूबर 2020	पृष्ठ 358–359
(6) ताल वाद्य शस्त्र	मनोहर भालचन्द्र राव मराठे	.....	पृष्ठ–124
(7) ताल सर्वांग	विद्यानाथ सिंह	.....	पृष्ठ–32
(8) भारतीय संगीत वाद्य	डॉ0 लालमणि मिश्रा	.....	.....
(9) तालकोश	गिरीशचन्द्र श्री0	.....	.....
(10) गूगल, विकीपिडिया			